वेदों की ओर लौटो !

॥ ओ३म् ॥

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

श्रेष्ठ मानव बनो !

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को जन-जन तक पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

वेदोद्धारक, युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

पू. स्वामी श्रद्धानन्दजी (हरिश्चन्द्र गुरुजी)

वर्ष १९ अंक १ १० जनवरी २०१९

'मेरे शरीर पर पडी एक-एक चोट ब्रिटिश साम्राज्य के कफन की कील बनेगी।'

\- लाला लाजपतराय

÷मानवनिर्माण अभियान’ प्रचार वाहन को ओ३म् ध्वज दिखाकर विदा करते हुए सभा के प्रधान योगमुनिजी, मंत्री राजेन्द्रजी दिवे, कोषाध्यक्ष उग्रसेनजी राठौर, लक्ष्मण आर्य-गुरुजी, रंगनाथजी तिवार, आर्यमुनिजी एवं प्रतापसिंहजी चौहान।

स्कूल में बच्चों को सम्बोधित करते हुए वैदिक विद्वान् पं.संदीपजी वैदिक। मंच पर सर्वश्री पं.प्रतापसिंहजी, श्रीरामजी आर्य, राऊतजी आदि। तथा सामने विचार श्रवण कर रहे छात्र एवं अध्यापक।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११९ | कलि संवत् ५११९ | विक्रम संवत् २०७५
दयानन्दाब्द १९४ | पौष | १० जनवरी २०१९

प्रधान सम्पादक
राजेन्द्र दिवे
(९८२२३६५२७२)

मार्गदर्शक सम्पादक
डॉ.ब्रह्ममुनि

सम्पादक
डॉ.नयनकुमार आचार्य
(९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक
प्रा.देवदत्त तुंगार(९३७२५४१७७७) **प्रा.ओमप्रकाश होलीकर**(९८८१२१५६१६), **प्रा.सत्यकाम पाठक**(९९७०५६२३५६), **ज्ञानकुमार आर्य**(९६२३८४२२४०)

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) श्रुतिसुगन्ध ४
२) सम्पादकीयम् ५
३) पंजाबकेसरी लाला लाजपतराय ७
४) दिल्ली का आर्य महासम्मेलन १०
५) सफल रहा ÷मानव निर्माण अभियान' १३

मराठी विभाग

१) उपनिषद संदेश/दयानंद वाणी १७
२) आधुनिक विज्ञान, म.दयानंद व जागतिक शांतता १८
३) महाराष्ट्र सभा-एक प्रगतिशील संघटना २३
४) वार्ताविशेष २५
५) शोकवार्ता २८
६) सभेचे उपक्रम ३०

*** प्रकाशक ***
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज,
परली-वैजनाथ ४३१५१५

*** मुद्रक ***
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परळी-वै.

वैदिक गर्जना के शुल्क
वार्षिक रु.१००/-
आजीवन रु.१०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा ।

श्रुतिसुगंध

मृत्यु हमें न मारे...×

परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां यस्ते अन्य इतरो देवयानात्।।
चतुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजाँ रीरिषो मोत वीरान्।।

(यजु.३५/७)

पदार्थान्वय–हे मनुष्य× **(या)** जो**(ते)** तेरा **(देवयानात्)** जिस मार्ग से विद्वान् लोग चलते, उससे **(इतरः)** भिन्न**(अन्यः)** और मार्ग के उस **(पन्थाम्)** मार्ग को **(मृत्यो)** मृत्यु **(परा, इहि)** दूर जावे, जिस कारण तू**(परम्)** उत्तम देवमार्ग को**(अनु)** अनुकूलता से प्राप्त हो। उसी से **(चक्षुष्मते)** उत्तम नेत्रवाले**(श्रृण्वते)** सुनते हुए**(ते)** तेरे लिये **(ब्रवीमि)**उपदेश करता हूं, जैसे मृत्यु **(नः)** हमारी प्रजा को न मारे और वीर पुरुषों को भी न मारे वैसे तू**(प्रजाम्)** सन्तानादि को **(मा, रीरिषः)** मत मार वा विषयादि से नष्ट मत कर **(उत)** और**(वीरान्)** विद्या और शरीर के बल से युक्त वीर पुरुषों को**(मा)** मत नष्ट कर।

भावार्थ – मनुष्यों को चाहिये कि जीवन पर्यन्त विद्वानों के मार्ग से चल के उत्तम अवस्था को प्राप्त हों और ब्रह्मचर्य के विना स्वयंवर विवाह करके कभी न्यून अवस्था की प्रजा सन्तानों को न उत्पन्न करें और न इन सन्तानों को ब्रह्मचर्य के अनुष्ठान से अलग रक्खें।

२६ जनवरी २०१९

।।सत्यमेव जयते।।

भारतीय गणतन्त्र दिवस

पर सभी देशवासियों को

हार्दिक शुभकामनाएं...×

स्वतन्त्रता, समता एवं बंधुता के सिद्धान्तों पर
सभी देशवासी चलते रहे, यही कामना×

***

संपादकीयम्

सवर्णों का आरक्षण...

समृद्ध राष्ट्र के लिए एक ऐसी स्थायी व्यवस्था की आवश्यकता होती है, जिससे समग्र प्रजा का सर्वहित हो। अन्यथा एक ओर सुविधा लागू होती हो और दूसरी ओर नई समस्या खडी होती हो, तो इसे दूरदृष्टि का अभाव का माना जायेगा। इसका ज्वलन्त उदाहरण है जातिआधारित आरक्षण× इसके जो दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं, उससे देश में विघटन की स्थिति खडी है। आज तो सम्प्रदाय व जातियों पर आधारित आरक्षण यह एकसंघ भारतीय समाज के नवनिर्माण में रोडा बनकर खडा है। क्योंकि अब अनेकों जातियां आरक्षण की मांग पर तुली हैं। देश के विभिन्न राज्यों में वे आन्दोलन कर रही हैं और सरकारें भी न्यायालयीन व्यवस्था को अनदेखा कर वोट बैंक को पक्का करने के लिए उन्हें आरक्षण दे रही हैं। संविधान में जाति आधारपर ४९.०५ प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान है, इसे आगे बढाया जा नहीं सकता, ऐसा न्यायालय का स्पष्ट निर्देश है। फिर भी न जाने क्यों शासनसहित अन्य राजनीतिक दल भी इनके समर्थन में खडे है? इसके पीछे चुनावी रणनीति ही कारण है।

आगामी लोकसभा चुनावों को सामने रखकर मोदी सरकार ने सवर्णों को आर्थिक आधार पर आरक्षण देने का कदम उठाया है। संसद के दोनों सदनों में यह खुले प्रवर्ग को १० प्रतिशत आरक्षण देने का विधेयक हाल ही में पारित हो चुका है। क्या इसकी आवश्यकता पहले क्यों नहीं हुई? जैसा कि पिछडी जातियों के लोगों को आरक्षण मिला, वैसे ही सवर्ण जाति में आर्थिक विपन्नावस्था में पलनेवाले लोग क्या नहीं थे? फिर क्यों न उसी समय आरक्षण की सुविधा खुले प्रवर्ग के गरीब लोगों को नहीं दी गयी? सिर्फ अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति एवं ओबीसी वर्गों को ही इसके लिए पात्र बनाया गया, यह असमानता क्यों? इसके परिणामस्वरूप आज अनेकों सवर्ण जातियां भी आरक्षण की मांग कर रही हैं। संसद द्वारा पारित सवर्णों के आरक्षण से एक अच्छा हुआ कि जातियों को आधार छुटकर वह आर्थिक तो बन गया× प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या सच में इसका लाभ सभी सवर्ण लोग उठायेंगे? क्योंकि इसके लिए वार्षिक आय की मर्यादा कम से कम ८ लाख रूपयों की हुई है। साथ ही जिसके पास ५ एकड से कम जमीन व १ हजार वर्ग फीट से कम का आवास हो...× क्या यह मापदंड सही है? फिर वह व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से पिछडा कैसे माना

जायेगा? रही बात १० प्रतिशत सवर्ण आरक्षण की× इसका लाभ सभी सवर्णों को कैसे होगा? क्योंकि लगभग ९० प्रतिशत लोग सवर्ण गरीब हैं।

इससे एक प्रश्न ओर खडा होता है कि, स्वतन्त्रता के ७० वर्षों में पिछडी जाति की तीन-तीन पीढियों ने आरक्षण का लाभ उठाया और अपनी आर्थिक स्थिति सुधार ली है। तब क्यों न इनका आरक्षण खतम किया जाय? और फिर जातियां सक्षम बनने पर उनके बनें रहने का औचित्य भी कहाँ रह जाता है? अतः जातियों की लक्ष्मणरेखा भी मिट जायेगी और देश से जातिभेद की समस्या भी समाप्त हो जायेगी। यह था आर्थिक कमजोरियों से ऊपर उठने का तरिका× संविधाननिर्माता डा.बाबासाहब अम्बेडकर ने भी कहा था कि, आरक्षण केवल दस वर्ष तक ही रखना चाहिये। फिर भी इसके बाद इनकी अवधियां बढायी गयी। वी.पी.सिंह ने तो मंडल का बिगुल बजाकर ओ.बी.सी.जातियों को भी आरक्षण लागू किया। मान लो आरक्षण ले भी लिया, तब आर्थिक स्थितियां सुधरने पर उसे बंद क्यों नहीं किया गया? अभी ओर कितने वर्षों तक आरक्षण का लाभ उठाते रहेंगें ? अधिक समय तक सुविधाओं का लाभ मिलता रहे, तो इससे मनुष्य में आलस्य, अकर्मण्यता, गर्वाभिमान जैसे दोष पनपते हैं और श्रम न करने की प्रवृत्ति भी खडी होती है। आज हम समाज में क्या देख रहे हैं? पिछडा समाज आर्थिक दृष्टि से विकसित तो हुआ, लेकिन उसका सामाजिक उन्नयन बहुत कम हुआ है। आज इस वास्तविकता को ग्रहण करने के लिए कोई तैयार नहीं है। दुर्भाग्य से ऐसा नहीं हुआ... और एक विचित्र सी परम्परा जारी है। जिससे देश का सामाजिक स्तर सदैव गिरता रही रहा है।

जाति के आधारपर आरक्षण खत्म होने पर जाति के निशान न रहेंगें और राष्ट्र में सामाजिक एकता का नया अध्याय शुरु हो जायेगा। लेकिन संभवतः ऐसा साहस न तो सरकार करेगी, न विरोधी पार्टियाँ और न ही आरक्षणभोगी लोग× क्योंकि इतनी उदारता किसमें है? जो कि सहजता से मिलनेवाले धनलाभ को ठुकरा सके। क्योंकि अब जातियों के संगठन मजबूत हो चुके हैं। यही जातिसमूह चुनावों में वोटबैंक बन रही है, तब कौन इसके विरोध में कदम उठायेगा? जिन सुविधाओं ने दुर्बलता को सबलता में रूपांतरित किया, वे ही दुर्बलतायें अब क्रूरता व संघर्ष में परिवर्तित हो रही है। इसलिए विवेकपूर्ण विचारों से सर्वहित को स्वीकार कर आरक्षण की नीतियाँ आर्थिक आधार पर लागू करें, तो इसी में ही देश का सर्वकल्याण होगा...×

- नयनकुमार आचार्य

जयन्ती दिवस(२८ जनवरी)पर-

पंजाब केसरी लाला लाजपतराय

- (स्व.) डॉ.भवानीलाल भारतीय

देश की स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करनेवालों में लाला लाजपतराय का नाम चिरस्मरणीय रहेगा। ये वही बलिदानी थे, जिन्होंने स्पष्ट रूप का पाठ महर्षि कियाथा कि हमें राष्ट्रभक्ति का पाठ महर्षि दयानन्द ने सिखाया है और आर्यसमाज रूपी माता की गोद में बैठकर ही हम स्वदेश हित में कुछ कर पाए हैं।

लाला लाजपतराय का जन्म पंजाब प्रान्त के फरीदकोट जिले के एक गाँव ढुंढिके में हुआ था। ये जन्म से वैश्य थे किन्तु गुण, कर्म, स्वभाव से क्षत्रिय स्वभाव के थे। सन १८८० में एण्ट्रेस की परीक्षा पास कर लाला लाजपतराय लाहौर आये। यहाँ पर गवर्नमेंट कॉलेज से एम.ए. तथा कानून की मुख्तारी परीक्षाएं साथ-साथ उत्तीर्ण कीं। १८८२ के वर्ष में लाहौर में ही वे आर्य समाज के सम्पर्क में आये। लाला साईंदास की प्रेरणा से वे इस समाज के सदस्य बने। पं.गुरुदत्त तथा लाला हंसराज जैसे युवक जहाँ कॉलेज में लाला लाजपतराय के सहपाठी थे, वहाँ ये लोग आर्यसमाज में भी उनके सहयोगी कार्यकर्त्ता थे। डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर की स्थापना तथा संचालन में लाला लाजपतराय का भी मूल्यवान सहयोग रहा। वे विभिन्न प्रतिनिधि-मण्डलों के सदस्य बनकर कॉलेज की स्थापना के लिए धन-संग्रह के लिए देश के विभिन्न नगरों में जाते रहे।

१८८८ में वे काँग्रेस-आंदोलन से जुडे। प्रथम बार वे इलाहाबाद अधिवेशन में सम्मिलित हुए। १९०६ में वे पं.गोपालकृष्ण गोखले के साथ काँग्रेस के शिष्टमंडल के सदस्य के रूप में इंग्लैण्ड गए। वहाँ से वे अमेरिका चले गए और देश की स्वतन्त्रता के लए पश्चिमी देशों में अनुकूल वातावरण बनाया। लाला लाजपतराय ही प्रथम महापुरुष थे, जिन्होंने राष्ट्रीय महासभा में पूर्ण आजादी प्राप्त करने के विचारों का प्रसार किया और ब्रिटिश ताज के विचारों का प्रसार किया और ब्रिटिश ताज के अन्तर्गत रहकर देश को सीमित स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए कांग्रेस के आदर्श का विरोध किया। उन्होंने लोकमान्य तिलक तथा बंगाली नेता विपिनचन्द्रपाल के सहयोग से, कांग्रेस में उग्रवादी गरम विचारधारा का प्रवेश कराया। उन्होंने१९०५ की बनारस-कांग्रेस में ब्रिटिश युवराज के भारत आगमन के समय, उनका स्वागत करने का डटकर विरोध किया।

आर्यसमाज में रहकर ही लाला जी ने जनहित के कार्यों में भाग लेना सीखा था। जब सम्पूर्ण उत्तर भारत अकाल की चपेट में आ गया, तब लाला जी अपने साथियों को लेकर अकाल-राहत-कार्यों में जुट गए। उन्होंने अनाथ बालकों को आर्य अनाथालय फिरोजपूरा में प्रवेश कराया, जब कि ईसाई मिशनरी उन्हें लेने के लिए तैयार बैठे थे। १९०५ में काँगडा में भूकम्प पीडितों की सहायता के लिए उन दुर्गम पर्वतीय स्थलों पर पहुँचे । इस कार्य में डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर के छात्र लाला जी के साथ थे। उडीसा, मध्यप्रदेश तथा संयुक्त प्रान्त में जब १९०७ में भयकर दुष्काल पडा, तब लाला लाजपतराय तुरन्त सहायता-कार्यों में जुट गए।

अब तक लालाजी देश के राजनैतिक क्षितिज पर, एक प्रकाशमान नक्षत्र की भाँति उभर चुके थे। १९२० में विदेश-यात्रा से लौटने पर, उन्होंने महात्मा गाँधीद्वारा प्रवर्तित असहयोग-आन्दोलन का समर्थन किया। इसी वर्ष वे कोलकाता में आयोजित कांग्रेस के विशेष अधिवेशन के अध्यक्ष बनाए गए। १८२४ में उन्होंने ÷स्वराज पार्टी' का गठन किया और केन्द्रीय असेम्बली के सदस्य चुने गए। स्वामी श्रद्धानन्द और पं.मदनमोहन मालवीय की ही भाँति लाला जी का, काँग्रेस की अल्पमत वालों के प्रति तुष्टीकरण की नीति से घोर मतभेद था। इसीलिए उन्होंने हिन्दू महासभा के कार्य में सहयोग दिया। उन दिनों हिन्दू सभा सच्चे राष्ट्रवादी नेताओं की दृष्टि में संकीर्ण या साम्प्रदायिक जमात नहीं समझी जाती थी। इसलिए उपर्युक्त नेताओं का इस संस्था से पूर्ण सहयोग था। १९२५ में हिन्दू महासभा के कोलकाता अधिवेशन के वे सभापति बनाए गए।

१९२८ में भारत की राजनैतिक स्थिति का जायजा लेने के लिए इंग्लैण्ड से सायमन-कमीशन यहाँ भेजा गया। कांग्रेस ने इसके बहिष्कार का निर्णय लिया। सारे देश में सायमन-कमीशन के विरोध के स्वर गूँजने लगे। कमीशन के सदस्य जिन-जिन नगरों में गए, वहाँ-वहाँ उसके विरोध में कमीशन के बहिष्कार का निश्चय हुआ।

३० अक्तूबर १९२८ को कमीशन लाहौर आया। नागरिकों ने कमीशन के सदस्यों को रेल्वे स्टेशन पर ही काले झण्डे दिखाने का निश्चय किया। पंजाब सरकार ने १४४ धारा लगा दी। तथापि सैकडों लोग स्टेशन पर एकत्र हो गए। **÷सायमन कमीशन वापस जाओ**' के नारों से आकाश गूँज उठा। पुलिस को डण्डे बरसाने का आदेश मिला। निहत्थे नागरिकों पर डण्डा प्रहार होने लगा। अंग्रेज सार्जेंट सांडर्स ने लाला जी की छाती पर लाठी का प्रहार किया। भारत के इस बूढे शेर को मार्मिक आघात पहुँचा। उसी सायंकाल

आयोजित जन-सभा में नरकेसरी लाला लाजपतराय ने गर्जना पूर्ण स्वर में कहा - ÷मेरे शरीर पर पडी विदेशी सरकार की एक-एक लाठी अंग्रेजी राज्य के कफन की कील साबित होगी।' इसी लाठी प्रहार से पीडित होकर लाला लाजपतराय का १७ नवम्बर १९२८ को निधन हुआ।

लाला जी का व्यक्तित्त्व बहुआयामी था। वे एक श्रेष्ठ वक्ता, प्रभावशाली लेखक, सार्वजनिक नेता और कार्यकर्त्ता, समर्पित समाजसेवक, शिक्षाशास्त्री, गम्भीर चिन्तक तथा विचारक थे। उन्होंने उर्दू तथा अंग्रेजी में अनेक उत्कृष्ट ग्रन्थों की रचना की। भारत तथा विदेश के कतिपय महापुरुषों के उनके द्वारालिखित जीवन-चरित अत्यन्त लोकप्रिय हुए। सम्राट अशोक, शिवाजी, स्वामी दयानन्द, पं.गुरुदत्त विद्यार्थी तथा योगिराज श्रीकष्ण के जीवन-चरित् तो उन्होंने लिखे ही, इटली के देशभक्त गैरीबाल्डी तथा मैजिनी के जीवन-चरितों ने उन्हें अभूतपूर्व ख्याति दिलाई। देशवासियों में स्वातन्त्र्य चेतना को जागृत करने में इन ग्रन्थों की भूमिका इतनी महत्त्वपूर्ण मानी गई कि विदेशी शासन ने इन जीवनियों पर ही प्रतिबन्ध लगा दिया। भारतीय शिक्षा तथा अर्थशास्त्र जैसे विषयों पर भी उन्होंने प्रामाणिक ग्रन्थ लिखे। उनकी लिखी ÷÷दि आर्यसमाज'' नामक पुस्तक १६१४ में प्रकाशित हुई। लाला जी ने अपनी आत्मकथा लिखी है।

ऐसे महर्षि दयानन्द के अनुपम सिपाही, महान देशभक्त, राष्ट्र बलिदानी आर्य समाज के वरिष्ठ अनुयायी पंजाब केसरी लाला लाजपतराय के जन्म दिवस पर उन्हें कृतज्ञ आर्य समाज की ओर से शतशः अभिवादन।

वैदिक गर्जना के ग्राहक बनें...×

सभी आर्यजनों से निवेदन है कि, वैदिक मानव धर्म के प्रचार एवं प्रसार में संलग्न महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा की मासिक पत्रिका ÷वैदिक गर्जना'(हिन्दी-मराठी)के आप अधिकाधिक आजीवन ग्राहक बनें एवं अन्यों को भी इसके लिए प्रेरित करें। वैदिक सिद्धान्तों को जानने तथा आर्यजगत् के समाचारों को समझने के लिए यह पत्रिका अत्यंत उपयुक्त है। अत: रू.१००० सभा के एस.बी.आय.परली खाता क्र.11154152843, आय.एफ.एस.सी.कोड-SBIN0003406 में भेजकर ग्राहक बनें। इसकी की जानकारी सभा के व्यवस्थापक श्री रंगनाथजी तिवार मो.९४२३४७२७९१ पर अवश्य दें। जिन ग्राहकों को पत्रिका प्राप्त नहीं होती, वे भी श्री तिवारजी को सूचित करें, ताकि उन्हें दुबारा पत्रिका भेजी जा सके। -सभामन्त्री

दिल्ली का अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन ...×

(वृत्तान्त- गतांक का शेष भाग)

आर्य महासम्मेलन के तीसरे दिन प्रात:कालीन सत्र में उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री योगी आदित्यनाथजी का बहुतही ओजस्वी सम्बोधन हुआ। उन्होंने कहा - ÷यह आर्यमहासम्मेलन अपने आप में एक कुम्भमेला है। आर्य समाज से मेरा नजदीकी से सम्बन्ध रहा है। इसलिए जहां कहीं पर भी आर्य समाज द्वारा कार्यक्रमों का आयोजन होता है, तब मैं उससे भावनात्मक रूप जुड जाता हूँ। देश की वर्षों की गुलामी के कालखण्ड में १८७५ में आर्यसमाज आशा की एक किरण बनकर उभरा था। इस आन्दोलन को खडा करने में महर्षि दयानन्द को तथा विश्व के कौने-कोने में रहनेवाले आर्यों के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूं। यदि हम सभी सचेत हो जाय तो देश की सामाजिक, सांस्कृतिक और जितनी भी समस्याएं हैं, उनका समाधान स्वयमेव हो जायेगा। आज तो हमारे लिए अनुकूल परिस्थितियां हैं, इसलिए कार्य अधिक हो सकता है। सन् १८५७ की क्रान्ति हो, या देश की आजादी× आर्य समाज ने बहुत कार्य किये हैं। देश की क्रान्तिकारी फौज को तैयार करने का श्रेय आर्य समाज को ही जाता है। देश में स्वाभिमान, स्व-अस्तित्व व अस्मिता को जगाने में आर्य समाज ही मूल कारण है।'

मुख्यमन्त्री श्री योगिजी ने अपने प्रवाभोत्पादक सम्बोधन में आगे कहा कि भारत में वेदों की पुन:प्रतिष्ठा, शिक्षा प्रसार, जातिविहीत समाज निर्माण, शुद्धि आन्दोलन आदि विषयों पर आर्य समाज ही अग्रणी रहा है। आर्य समाज के ही अनुयायियों ने भारत के नवनिर्माण के बीज अपने साधनामय क्रान्तिकारी जीवन में बोये थे। वर्तमान समय में श्री मोदीजी के ÷न्यू इण्डिया' (नये भारत) के सपने को साकार करने के लिए आर्य समाज से नई ऊर्जा व ताकद मिलेगी । जातिवाद, क्षेत्रवाद, आतंकवाद, भयवाद आदि समस्याओं से निपटने के लिए इस राष्ट्र को आर्य समाज की सबसे अधिक जरुरत है। इसके लिए हमें आर्य समाज के माध्यम से संस्कारयुक्त कार्यक्रमों को आगे बढाना होगा। और इस कार्य में लिए हम पूरी ताकद के साथ आर्य समाज की योजनाओं को पूरा करने में जुट जायेंगें। स्कूल व कॉलेजों में महापुरुषों के जन्मदिवस या स्मृतिदिवस पर छुट्टियों के बजाय लेखन, भाषण प्रतियोगिताएं अथवा कार्यक्रम लेकर उन महापुरुषों से प्रेरणा पाने का प्रयास करेंगें।

अन्त में उन्होंने प्रयागराज में होनेवाले कुम्भ मेले पर पधारने का आवाहन कर इस महासम्मेलन के विषय में कहा-मैं इस

विशाल समारोह को टाऊनशिप के रूप में अनुभव कर रहा हूँ।

दोपहर के सत्र दिल्ली के कई विद्यालयों के छात्रों ने लघुनाटिकाएं तथा दक्षिण अफ्रिका से पधारी कन्याओंने भजन प्रस्तुत किये। तत्पश्चात् सांसदीय कार्य राज्यमन्त्री श्री विजयजी गोयल, देवबन्द के विधायक, आचार्य डॉ.महावीरजी अग्रवाल, स्वामी गोविन्दगिरिजी महाराज आदियों ने भी उपस्थितों को सम्बोधित किया। रात्रकालीन सत्र में आर्यजगत् के भजनोपदेशकों ने भजनों की प्रस्तुति कर वैदिक धर्म के प्रसार व प्रचार में उनकी महत्त्वपूर्ण भागिदारी रेखांकित की।

आर्य महासम्मेलन के अन्तिम दिन प्रात: विभिन्न प्रान्तीय सभाओं के प्रतिनिधियों का सम्मेलन हुआ, जिसमें महाराष्ट्र के प्रधान श्री योगमुनिजी ने भी भाग लिया। उन्होंने कहा कि हम अपने राज्य में विभिन्न गतिविधियों के माध्यम आर्य समाज को समाजोपयोगी बनाने का प्रयास कर रहे हैं। इस अवसर श्री मुनिजी ने भजन भी प्रस्तुत किया। श्री विनयजी आर्य ने बताया कि सार्वदेशिक सभा के नेतृत्त्व में देश की सभी प्रतिनिधि सभायें एकजुट होकर कार्य कर रही है। भविष्य में आर्य समाज द्वारा एक ऐसा कार्यक्रम हाथ में लिया जायेगा, जिससे बच्चे, युवक, प्रौढ तथा सामान्य लोग हमसे जुडते जायेंगें। इस अवसर सभी सभाओं के प्रधान या मन्त्रियों ने अपने राज्यों में चल रही गतिविधियों की जानकारी दी।

तत्पश्चात् इस महासम्मेलन का समापन सत्र हुआ, जिसमें देश के गृहमन्त्री श्री राजनाथसिंहजी मुख्यातिथि के रूप में पधारे थे। मंच पर भारतीय अन्तरिक्षयात्री श्री राकेशजी शर्मा, केन्द्रीय मानव संसाधन राज्यमन्त्री डॉ.सत्यपालसिंहजी, हिमाचल के राज्यपाल आचार्य देवव्रतजी, सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष महाशय धर्मपालजी आदि विराजमान थे।

गृहमन्त्री श्री राजनाथसिंहजी ने सुस्पष्ट, मृदुल, भावप्रद एवं प्रभावशाली वक्तव्य में आर्य महासम्मेलन के विशाल आयोजन की मुक्तकंठ से प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि यहां आने पर उन्हें भारत की सांस्कृतिक एकता व एक महान शक्ति के दर्शन हो रहे है। विश्व की धरापर रहनेवालों को भारतीय ऋषियों ने अपने परिवार का सदस्य माना है। ÷वसुधैव कुटुम्बकम्।' का उद्घोष इसी धरती से हुआ। इस महासम्मेलन का इतना अनुशासनपूर्ण एवं शान्ततामय विशाल स्वरूप सही अर्थों में अपने आप में एक महान् कार्य है। सभी आर्य आध्यात्मिक भाव में डुबे देखकर मैं बहुत ही प्रभावित हो गया हूं। यहां पर आने पर मुझे कुछ डिफरन्ट व्हाईब्रेशन की अनुभूति हो रही

है। क्या करिश्मा किया है महर्षि दयानन्द और आर्य समाज ने× मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि यह आर्य सम्मेलन सफलता की चोटी पर इतना पहुंचेगा×

उन्होंने आगे कहा कि आज इस विशाल महासम्मेलन भले ही समापन हो रहा है, लेकिन आर्य समाज का काम और अधिक तेज गति से बढते रहना चाहिये। आर्यजनों को आश्वस्त करते हुए उन्होंने कहा कि जिस पवित्र उद्देश्य से आप आर्यजन काम कर रहे हैं, आपको उसकी प्राप्ति होकर ही रहेगी। आर्य समाज यह केवल संस्था ही नहीं, बल्कि एक दिव्य क्रान्तिकारी विचार है। अब इसे बढने कोई रोक नहीं पायेगा। सोते समाज को जगा देनेवाली यह एक महान शक्ति है। ÷कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।' यह विचारसूक्त कितना आशयपूर्ण है। आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द के बारे में मैं जब सोचता हूँ, तो गदगद् हो जाता हूं। कितना बडा उनका मन था× इतनी सहृदयता, दयालुता व उदारता कि स्वयं को मारनेवाले जगन्नाथ रसाइये को भी धन देकर दूर देश भेज दिया। कितना बडा आध्यात्मिक जीवन× ऐसे विशाल मन का सपना छोटा कैसे हो सकता है? अत: ÷कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' अर्थात् सारे संसार को श्रेष्ठ मानव बनाने का उनका उद्देश्य उनके अन्तिम जीवनप्रसंग से ज्ञात होता है। यह सन्देश भारत की धरती से विश्व के सभी देशों को मानवता की राह पर चलने के लिए सदैव प्रेरणा देता रहेगा।

इस महासम्मेलन में सिक्कीम के राज्यपाल श्री गंगाप्रसादजी आर्य, आसाम के राज्यपाल प्रो.जगदिशजी मुखी एवं अन्य नेताओं तथा विद्वानों ने विचार रखें व मार्गदर्शन किया। सम्पूर्ण समारोह का मंच संचालन श्री विनयजी आर्य, डॉ.राजेन्द्र विद्यालंकार, डॉ.विनय विद्यालंकार आदियों ने बहुत उत्तम प्रकार से किया। सम्मेलन स्थल पर सम्पूर्ण व्यवस्था बढिया ढंग से की गयी थी, जिसे देखकर दर्शक आश्चर्यचकित हो जाते थे। सम्मेलन में सहभागी सभी आर्यजनों की निवास की व्यवस्था टेंटो में की गयी थी। भोजन के विषय में तो क्या कहें? बहुत ही उत्तम प्रकार का भोजन सभी को मिलता रहा। प्रवेशद्वारों, चौराहों को आकर्षक रीति से सजाया गया था। वैदिक वाङ्मय साहित्य विक्रय के दुकान बहुत ही उत्त्कृष्ट प्रकार से सजाये गये थे। यह सारी व्यवस्था आयोजक आर्यजनों ने रात-दिन एक साथ जुटकर की थी। अनेकों उद्योगपतियों ने बडी उदारता से दान दिया। इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की अभूतपूर्व सफलता को सार्वदेशिक व दिल्ली सभा के पदाधिकारियों का हार्दिक अभिनन्दन एवं बधाई...×

प्रस्तुति-डॉ.नयनकुमार आचार्य

सफल रहा ÷मानव निर्माण अभियान'

५५ शिक्षण संस्थानों में छात्रों का प्रबोधन

देश के उज्ज्वल भविष्य के रूप में जिनकी ओर देखा जाता है, ऐसे बालक-बालिकाओं एवं युवक-युवतियों में सुसंस्कारों व वैदिक मानवीय मूल्यों की स्थापना हो, इस उद्देश्य से महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा प्रतिवर्ष दिसम्बर माह में मानव निर्माण अभियान चलाती है। इसके अन्तर्गत एक प्रचार वाहन पूरे महिनाभर जगह-जगह के विभिन्न विद्यालयों व महाविद्यालयों में पहुंचता है। वहां पर वैदिक वक्ता के व्याख्यान, भजनोंपदेशक के प्रेरक भजन होते है और बहुत ही अल्प दरों में वैदिक साहित्य का वितरण भी किया जाता है।

इस वर्ष दि.३ दिसम्बर २०१८ से यह प्रचार अभियान शुरु हुआ। सभा कार्यालय परली-वैद्यनाथ (जि.बीड) में प्रधान श्री योगमुनिजी, मन्त्री श्री राजेन्द्रजी दिवे, कोषाध्यक्ष श्री उग्रसेनजी राठौर आदियों ने प्रात: ओ३म् ध्वज दिखाकर इस प्रचार वाहन को विदा किया। इस बार वैदिक प्रवक्ता के रूप में मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) से पं.श्री सन्दीपजी वैदिक को आमन्त्रित किया गया था। सभा के भजनोपदेशक श्री पं.प्रतापसिंहजी चौहान, प्रचारक श्री आर्यमुनिजी भी उनके साथ रहे। आरम्भ में पं.लक्ष्मण आर्य गुरुजी (परली) एवं श्री पं.श्रीराम आर्य गुरुजी (लातूर), श्री वसिष्ठजी आर्य(अम्बाजोगाई) व्याख्याता के रूप में इस अभियान में सम्मिलित हुए। मराठवाडा के लातूर, उस्मानाबाद, नान्देड, परभणी एवं बीड इन पांच जिलों के लगभग ५५ विद्यालयों व महाविद्यालयों में पहुंचकर इन विद्वानों ने विद्यार्थियों के नवनिर्माण के उद्देश्य से बहुत ही प्रभावशाली ढंग से अपने व्याख्यानों व भजनों की प्रस्तुति की।

पं.सन्दीपजी वैदिक ने छात्रों को उनके शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नयन हेतु सदैव जाग्रत रहने का आवाहन किया। आदर्श दिनचर्या, माता-पिता की सेवा व आज्ञापालन, निष्ठापूर्वक अध्ययन, सत्यग्रहण, ब्रह्मचर्य पालन, चरित्र संवर्धन, सामाजिक व राष्ट्रीय उत्तरदायित्व, मानवता, सद्व्यवहार, वैदिक संस्कृति व उसके पावन जीवनमूल्यों की रक्षा, देशभक्ति आदि विषयों पर उन्होंने उत्तमरीति से सम्बोधन दिये। आज के बदलते परिवेश में छात्रों को कर्तव्यपथपर चलते हुए सद्गुण ग्रहण करने का आवाहन उन्होंने किया। पाश्चात्य अपसंस्कृति से स्वयं को बचाते हुए पाठ्यक्रमिक अध्ययन

के साथ ही विभिन्न नैतिक मूल्यों को अपनाने पर भी उन्होंने बल दिया गया।

पं.प्रतापसिंहजी ने सरलतम व भावमधुर मराठी-हिन्दी भजनों के माध्यम से बच्चों में मनोरंजक वातावरण तैयार करते हुए उन्हें उल्लसित किया। उनके द्वारा जगह-जगह पर प्रस्तुत - ÷÷सरळ मार्ग सोडून माणसा...×'' यह मराठी गीत बहुत प्रेरक रहा। श्री आर्यमुनिजी ने बच्चों को चारों वेदों के दर्शन कराकर सत्यग्रहण करने के लिए आगे बढने का अनुरोध किया। विशेषत: छात्र-छात्राओं के साथ ही अध्यापकवर्ग को भी इस कार्यक्रमों का लाभ हुआ। उससे पूर्व उन-उन ग्रामों व नगरों के आर्य समाज पदाधिकारियों व कार्यकर्त्ताओं ने स्कूल व कॉलेज के प्रधानाचार्यों से मिलकर इन कार्यक्रमों के आयोजन की सूचना दी व नियोजन किया और विद्वानों के निवास व भोजन की यथाशक्ति व्यवस्था की। जिन ग्राम व नगर में आर्य समाज न हो, वहां के स्कूलों में विद्वान स्वयमेव पहुंचे और व्याख्यानों का महत्त्व बताकर कार्यक्रम करवाये।

व्याख्यान व भजनोपदेशक के साथ प्रचार वाहन में अल्पदरों में छोटी-छोटी पुस्तकें, यथा-मातृगौरव, पितृगौरव, आचार्य गौरव, धर्म और विज्ञान एवं अन्य मौलिक वैदिक साहित्य बांटा गया। इन पुस्तकों के सेट, जिनकी कीमत रू.२८ है, वह मात्र रू.१० में छात्रों के वितरीत किया। ४० रू.वाला ÷सत्यार्थ प्रकाश' यह ग्रन्थ भी केवल रू.१० में ही छात्रों को प्रदान किया गया। इस विक्रय कार्य में वाहनचालक एवं आर्य समाज से जुडे श्री दत्तरावजी गित्ते ने बडी लगन से सहयोग दिया। समारोह के अन्त में सभा की ओर उन-उन शिक्षालयों के ÷सत्यार्थ प्रकाश' ग्रन्थ एवं महर्षि दयानन्द की प्रतिमा भेंट की गयी। इस बार ÷सत्यार्थ प्रकाश' के ज्ञानदानदाता यजमान थे श्री लखमसीभाई वेलानी(पुणे), डॉ.श्री ब्रह्ममुनिजी(परली) एवं श्रीमती मैत्रेयी यति(प्रतिभादेवी पाटील,लातूर) ने सहयोग किया। इन्होंने अपने दिवंगत माता-पिताओं की स्मृतियों में ये ग्रन्थ न्यून दरों में उपलब्ध कराये और ज्ञानदान की परम्परा को आगे बढाया।

इस मानव निर्माण अभियान व्याख्यानमाला के लिए पूर्वनिर्धारित विद्वान समय पर उपलब्ध न होने से सभा के सामने व्याख्याता के रूप ऐन वक्त पर किसे बुलाये? यह समस्या खडी थी। तब सभा पदाधिकारियों ने श्री सन्दीपजी को सम्पर्क किया। तुरन्त सूचना मिलने पर उन्होंने सभा के आग्रह से ऋषि मिशन को पूर्ण करने के लिए पूर्वनियोजित कार्यक्रम छोडकर वे मुजफ्फरनगर से एक माह के लिए महाराष्ट्र पधारे और बडी प्रसन्नतापूर्वक कार्यक्रमों में सम्मिलित हुए। अभियान के

दौरान श्री वैदिकजी व अन्य विद्वानों व सहयोगियों को अनेकों कठिनाइयों का सामना करना पडा। किसी-किसी स्थान पर निवास व भोजन की भी समस्या खडी हुई, किन्तु मानवता का सन्देश पहुंचाने के पवित्र उद्देश्य को पूरा करने में ये सभी सोत्साह जुट गये और इस अभियान को पूरी श्रद्धा व निष्ठा के साथ सफल बनाया। इसलिए सभा इन सभी का हृदय से आभार प्रकट करती है।

- राजेन्द्र दिवे(सभामन्त्री)

÷वैदिक व्याख्यानमाला' का विस्तृत ब्यौरा निम्न रूप से हैं -

१) दि.०३.१२.२०१८ - १. जोधाप्रसादजी मोदी माध्यमिक विद्यालय, अंबाजोगाई
२. जि.प.कन्या प्रशाला, अंबाजोगाई
३. नेताजी विद्यालय, रिंगरोड, अंबाजोगाई
४. श्री छत्रपती शाहू आश्रमशाळा, बर्दापूर ता.अंबाजोगाई

२) दि.०४.१२.२०१८- १. भगतसिंह विद्यालय, पळसी ता.रेणापूर
२. श्री शैल्य मल्लिकार्जुन विद्यामंदिर, कोळगांव, समतापुर
३. श्री शैल्य मल्लिकार्जुन प्राथमिक शाळा, कोळगांव

३) दि.०५.१२.२०१८ - १. जिजामाता कन्या विद्यालय, लातूर
२. यशवंत विद्यालय, लातूर
३. महाराष्ट्र विद्यालय, लातूर
४. श्यामराव पाटील विद्यालय, मित्रनगर, लातूर

४) दि.०६.१२.२०१८- सावित्रीबाई फुले कन्या विद्यालय, टाका ता.औसा जि.लातूर

५) दि.०७.१२.२०१८- इन्द्रधनु सेवा वृद्धाश्रम, चौरस्ता, उमरगा

६) दि.०८.१२.२०१८- श्रीकृष्ण माध्य./उच्च माध्यमिक विद्यालय,गुंजोटी

७) दि.०९.१२.२०१८- आर्य समाज, गुंजोटी-वेदप्रकाश बलिदान समारोह

८) दि.१०.१२.२०१८- लो.टिळक विद्यालय, कदेर

९) दि.११.१२.२०१८- १. हु.वेदप्रकाश बलिदान समारोह, गुंजोटी, यज्ञ
२. हु.वेदप्रकाश बलिदान समारोह, जुलूस

१०) दि.१२.१२.२०१८- १. श्री ज्ञानेश्वर विद्यालय, तुरोरी ता.उमरगा

११) दि.१३.१२.२०१८- १. इंदिरा गांधी मा. व उ.मा.विद्यालय, निलंगा
२. जयभारत विद्यालय, निलंगा
३.शिवाजी विद्यालय, निलंगा

१२. दि.१४.१२.२०१८- १. महाराष्ट्र विद्यालय, औराद शहा. ता.निलंगा
२. पं.वीरभद्र आर्य विद्यालय, औराद शहा. ता.निलगा
३. युनिव्हर्स पब्लिक स्कूल,औराद शहा. ता.निलगा

१३. दि.१५.१२.२०१८– श्री व्यंकटेश मा. व उ.मा. विद्यालय, वलांडी
१४. दि.१६.१२.२०१८– श्री समर्थ धोंडूतात्या आश्रमशाळा, उदगीर
१५. दि.१७.१२.२०१८– जनजागृति विद्यालय, देगलूर जि.नांदेड
१६. दि.१८.१२.२०१८– १. धुंडा महाराज देगलूरकर महाविद्यालय, देगलूर
२. पू.गोलवलकर गुरूजी मा.विद्यालय, देगलूर
१७. दि.१९.१२.२०१८– १. विझ्डम दिगी कन्स्टेप्ट स्कूल, धर्माबाद
२. जिजामाता मा. व उ.मा. कन्या विद्यालय, धर्माबाद
३. कस्तुरबा गांधी बालिका विद्यालय, धर्माबाद
१८. दि.२०.१२.२०१८– १. पतंजली ध्यान योग शिबिर, धर्माबाद
२. आय.टी.आय. कॉलेज, धर्माबाद
१९. दि.२१.१२.२०१८– १.कस्तुरबा गांधी बालिका विद्यालय, मुदखेड
२. रा.शाहू विद्यालय, मुदखेड
२०. दि.२२.१२.२०१८– शिवाजी विद्यालय, सिडको, नांदेड
२१. दि.२३.१२.२०१८– १. आर्य समाज, परभणी– साप्ता.सत्संग
२. श्री सारंग स्वामी विद्यालय, परभणी
२२. दि.२४.१२.२०१८– १. एन.वी.एस.मराठवाडा हायस्कूल, परभणी
२. श्री सालासर हनुमान मंदिर, परभणी–सत्संग
३. ज्ञानगंगा गुरुकुल विद्यालय, परभणी
४. सत्संग–अग्रवाल मंगल कार्यालय, परभणी
२३. दि.२५.१२.२०१८– ख्रिसमस डे के कारण स्कूलों को अवकाश
२४. दि.२६.१२.२०१८– १. जगमित्र नागा विद्यालय, परळी–वै.
२. आदर्श विद्यालय, मांडवा ता.परळी–वै.
३. केदारी महाराज विद्यालय, नंदनज ता.परळी–वै.
२५. दि.२७.१२.२०१८– १. श्री सरस्वती विद्यालय, परळी–वै.
२. सोमेश्वर विद्यालय, जिरेवाडी ता.परळी–वै.
३. भगवानबाबा विद्यालय, नंदागौळ ता.परळी–वै.
२५. दि.२८.१२.२०१८– १. भेल सेकेंडरी स्कूल, परळी–वै.
२. शंकर विद्यालय, घाटनांदूर ता.अंबाजोगाई
३. आदर्श विद्यालय, घाटनांदुर ता.अंबाजोगाई
४. वसुंधरा महाविद्यालय, घाटनांदुर ता.अंबाजोगाई

सभी विद्यालयों, महाविद्यालयों, आर्यसमाजों व कार्यकर्त्ताओं के हार्दिक आभार×

।।ओ३म्।।

माझा मराठाची बोलु कवतिके । परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ।। (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

उपनिषद संदेश — जड उपासना अंध:कारमय..×

अन्धन्तम: प्र विशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते।
ततो भूयऽइव ते तमो यऽ उ सम्भूत्याँ रता:।।

(ईशावास्योपनिषद्-१/९)

अर्थ– जे लोक परमेश्वराला सोडून अनादी, अशा (ज्याची उत्पत्ती कधीही होत नाही) सत्व, रज, तमोगुण रुपी प्रकृती नामक जड वस्तूला उपासनीय समजतात, ते झाकून टाकणाऱ्या अंध:कारात प्रवेश करतात. तसेच जे महत्तत्त्वादी स्वरुपात परिणाम पावणाऱ्या सृष्टीत रममाण होणारे असतात. ते निश्चितच त्याहीपेक्षा अत्यधिक प्रमाणात अंध:कारात प्रवेश करतात.

दयानंद वाणी — पाषाणादिकांची मूर्ती दोषयुक्त...

ज्या अर्थी परमेश्वर निराकार, सर्वव्यापक आहे, त्या अर्थी त्याची मूर्ती बनूच शकत नाही आणि जर केवळ मूर्तीच्या दर्शनाने परमेश्वराचे स्मरण होत असेल तर परमेश्वराने निर्माण केलेली पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायू, वनस्पती वगैरे वस्तूंच्या अद्भुत रचना पाहून ईश्वराचे स्मरण होणार नाही काय? ज्या डोंगरातून माणूस मूर्ती घडवितो, ते डोंगर व पृथ्वी याच परमेश्वराने बनविलेल्या महामूर्ती आहेत, त्या पाहून परमेश्वराचे स्मरण होऊ शकणार नाही काय? शिवाय मूर्ती पाहिल्यानंतर परमेश्वराचे स्मरण होते असे जे तुम्ही म्हणता ते पूर्णपणे खोटे आहे. कारण जेंव्हा मूर्ती समोर नसेल तेंव्हा परमेश्वराचे स्मरण न झाल्याने माणूस एकांत मिळताच चोरी, जारी वगैरे दुष्कृत्ये करण्यास प्रवृत्त होईल. समोर मूर्ती नसल्यामुळे आपल्याला कोणी पाहत नाही, असे त्याला वाटेल आणि तो तो कुकर्म करेल. अशा प्रकारे पाषाणादिकांच्या मूर्तीची पूजा करण्यात अनेक दोष आहेत असे सिद्ध होते. **(सत्यार्थ प्रकाश/११वा सम्मुलास)**

आधुनिक विज्ञान, म.दयानंद व जागतिक शांतता

- डॉ.ब्रह्ममुनी वानप्रस्थी

अनादी काळापासून सृष्टीचा प्रवाह अखंडितपणे सुरु आहे. परमेश्वराने निर्माण केलेल्या या महान सृष्टीत सर्व चेतन-अचेतन तत्त्वे विशिष्ट नियमांनुसार सत्यमार्गाने वाटचाल करीत आहेत. वैदिक संकलपपाठात सृष्टीचे आयुष्य ४ अब्ज ३२ कोटी इतके प्रतिपादित केले आहे. याच वैदिक कालगणनेच्या अनुषंगाने आता वैज्ञानिकांनी या ब्रह्मांडाचे आयुष्य जवळपास अर्धे मान्य केलेले आहे. यानिमित्त आता हळू हळू आधुनिक जग वेदांच्या मान्यतेकडे वळतांना दिसून येत आहे, ही समाधानाची गोष्ट× सृष्टीच्या प्रारंभी परमेश्वराने अग्नी, वायू, आदित्य, अंगिरा या चार ऋषींच्या अंत:करणात वेदांचे पवित्र ज्ञान प्रकाशित केले. यातच सृष्टीची उत्पत्ती, स्थिती व लयासंबंधीचे तत्त्वज्ञान ही अंतर्भूत आहे. तसेच मानवाच्या ऐहिक व पारलौकिक सुखासाठीचे आणि समग्र प्राणिमात्राच्या कल्याणाचे ही ज्ञान या वैदिक ज्ञानात समाविष्ट आहे. इतकी वर्षे ही समग्र सृष्टी चालली, सध्या चालत आहे व भविष्यातही गतिमान होत राहील. ती एका विशिष्ट नियमांप्रमाणेच× सृष्टीचे हे नियम सर्वांकरिता सारखेच आहेत. ते सार्वकालिक, सार्वजनिक, सार्वदेशिक व वैश्विक आहेत. ते शाश्वत आहेत. त्यांच्यात बदल होऊ शकत नाही. ते सर्व नियम व्यक्ती व कालसापेक्ष नाहीत.

या सृष्टीमध्ये चेतन (सजीव) ही आहेत व जड (निर्जीव) ही आहेत. सजीवांमध्ये मानव ही योनी सर्वश्रेष्ठ मानली जाते. मुनष्यांचा इतिहास हा सृष्टीच्या प्रारंभापासूनच क्रांतिकारक प्रेरणादायी आहे. रामायण काळाच्या ही पूर्वीपासून साऱ्या जगात एक आदर्श व्यवस्था प्रचलित होती. त्या व्यवस्थेत सर्वांचे कल्याण समाविष्ट होते. त्यावेळचे तत्त्वज्ञान व समाजव्यवस्था ही सर्व वेदांतून आली होती. त्यामध्ये सर्वांचे कल्याण, ऐक्य, संरक्षण आणि उन्नतीसाठी संधी हे सर्वकांही गुणवत्तेच्या आधारावर होते. रामायणात माता-पित्याच्या आज्ञेत राहून रामांनी बंधुप्रेमापोटी राज्याच्या ही त्याग केला व वनवास भोगला. याउलट महाभारतात भावांभावांमध्ये संपत्ती व राज्यासाठी भांडणे झाली. महायुद्ध घडले आणि त्यात किती तरी मोठ्या प्रमाणात सैनिक, विद्वान, ज्ञानी, आचार्य वगैरे मारले गेले. तेंव्हापासून साऱ्या जगात अंधश्रद्धा, फुटीरता, उच्च-नीच भेदभाव आणि मत-पंथ व जाती इ.

जन्माला आले. खऱ्या अर्थाने हा ऱ्हासाचा काळ मानावा. त्यामुळे परमेश्वराची अपौरुषेय वेदवाणी देखील लुप्त होऊ लागली. वेदमंत्राचे अर्थ बदलून प्रसारित झाले. मंत्र तेच ठेवले, पण त्याचे अर्थ मात्र बदलले जाऊ लागले. त्याचबरोबर अमानवीय कृतींचा उपदेश सुरु झाला. वाईट गोष्टींना प्रोत्साहन देऊन त्या प्रमाणित केल्या जावू लागल्या. ते सर्व देवादीकांच्या तोंडी घातले. माणूस जेंव्हा वेदांच्या सत्यज्ञानापासून भरकटला, तेंव्हापासून ही सर्व भांडणे, हिंसा, उच्चनीच भेदभाव, कुटिलता, अंधश्रद्धा वाढीस लागल्या. त्यामुळे हे सर्व कांही पुण्यात्म्यांना मात्र रूचले नाही व ते दु:खी झाले. कारण या सत्पुरुषांना स्वत:च्या व दुसऱ्यांच्या आत्म्याचा आवाज ओळखता येत होता. कांहीनी तर या सर्व अज्ञान, अंधविश्वास व अन्यायाविरुद्ध आवाज देखील उठविला. महात्मा गौतम बुद्ध, महावीर वर्धमान, चार्वाक, म.पैगंबर, येशू अशा अनेकांनी वरील अंध चालीरीती व परंपरा विरुद्ध आवाज उठविला. या सर्व संत-सुधारकांनी विचारलेल्या प्रश्नांना तथाकथित प्रस्थापित धर्मगुरुंनी निसर्गनियमांच्या आधारे उत्तरे दिली नाहीत. याउलट वेद, ईश्वर, धर्म इत्यादींच्या नावावर अज्ञान, अंधश्रद्धा, अन्याय वाढवित राहिले. त्यातच मग दंडित करणे, वाळीत टाकणे आदी प्रकार वाढू लागले आणि यांचा विरोध दर्शवून प्रतिक्रियात्मक वेगळे मत-पंथांचे वेगळे विचार मांडले. यात सॉक्रेटिस सारख्या कांही आधुनिक तत्त्ववेत्त्यांचा व शास्त्रज्ञांचा ही सहभाग होता. पण दुर्दैवाने वरील जे की, विशुद्ध, शाश्वत, सत्य स्वरूपाचे होते. तसेच ते सृष्टी नियमांच्या विरुद्ध होते. त्याचवेळी तत्कालीन धर्मगुरुंनी आपली चूक सुधारली असती तर हे पंथ उदयास आलेच नसते.

जर काय मुळापर्यंत गेलो तर क्रिया-प्रतिक्रियावादी सर्व एकच होतात. याची सर्वाधिक जबाबदारी ईश्वर, वेद, वैदिक संस्कृती, धार्मिक आदी म्हणविणाऱ्यांची आहे. केवळ क्रिया-प्रतिक्रियावादातूनच आस्तिक-नास्तिक, मूर्तिपूजक-मूर्तिभंजक, स्वर्ग-नरक आणि सवर्ण-दलित इत्यादींचा भ्रमजाल वाढत गेला. शाश्वत सत्यज्ञानाकडे जाण्याचा कोणीही प्रयत्न केला नाही. हे वास्तविक ज्ञान समोर न आणल्यामुळे गैरसमजातून गैरसमज वाढत गेले. यामुळे मानवां-मानवांमध्ये द्वेष-मत्सर, संघर्ष, अन्याय वाढत गेले. धार्मिक म्हणून घेणाऱ्यांची दुकानदारी वाढल्याने पूर्वी व आज केवळ भारतातच नव्हे, तर साऱ्या जगात विघटन वाढत गेले.

हे सर्व कांही धर्म व अधर्माच्या नावावर चालत असतांनाच वैज्ञानिकांनी या दोघांनाही सोडून निसर्ग, पृथ्वी, सृष्टी

व त्यातील सर्व तत्त्वे आणि मानवजात याबाबत प्रात्यक्षिक करून जे सत्य पुढे आले व जाणले, ते ते सर्व या जगासाठी, मानवमात्रासाठी, कल्याणासाठी, उपकारासाठी व एकतेसाठी मानले आणि वैश्विक सत्य जगापुढे ठेवले. दृश्य-अदृश्य, सजीव-निर्जीव यांचा अभ्यास करीत-करीत ते संशोधन करीत राहिले. मोठ्या प्रयत्नांद्वारे त्यांनी वैज्ञानिक सुखसोयी जगाला उपलब्ध करून दिल्या. सध्या ते चरमोत्कर्षापर्यंत पोहोचले आहेत. म्हणून की काय ? सध्याचे विज्ञान सृष्टीचे हाफ लाईफ पिरेड, गॉड पार्टिकल पर्यंत पोहोचले आहे. एवढेच नव्हे तर त्यांनी प्रकृती पदार्थाचे अंतिम भाग हे सुद्धा जड असून त्याला कोणी तरी गती देतो. इथपर्यंत ते प्रयोगांती सिद्ध करून दिलेले आहे आणि यामुळेच आज वैज्ञानिक क्षेत्रात सर्व जग तंत्रविज्ञानाने जवळ आले. त्यातून वैश्विक सिद्धांत समोर आले. ऑक्सिजन, हायड्रोजन, कार्बनडायऑक्साईड, नायट्रोजन हे सर्व वायू अदृश्य असून देखील त्यांच्या गुणधर्माच्या आधारे तसेच कन्फर्मेटिव्ह टेस्टच्या आधारे वेगवेगळे दाखवून त्यांचा वेगवेगळा उपयोग मानवाला करून दिला आणि हे सर्व ज्ञान सार्वभौमिक, सार्वजनिक, सर्वांसाठी खुले असल्याचे सांगितले. तसेच त्याचे एकक आणि नावे देखील वैश्विक असल्याचे गुणधर्मांच्या आधारे सिद्ध करून दाखविले. त्याचाच एक भाग म्हणून आधुनिक विज्ञान समस्त मानवांकडे पाहत आहे. याचे हे फलित आहे की, हे विज्ञान वैश्विक स्तरावर अखिल मानवजातीच्या कल्याणाकरिता, सर्वांगिण प्रगतीकरिता प्रयत्नशील आहे. विज्ञानामुळेच सद्ययुगात कोणताही भेदभाव न बाळगता समानहक्क, सर्वांना सारख्या संधी, मुक्त स्वरूपात अधिकार इ. उपलब्ध होत आहेत.

आधुनिक विज्ञान केवळ सजीव-निर्जीवांचा अभ्यास जरी करीत असले तरी देखील ते आत्मा व परमात्म्याविषयी कांहीही विचार करीत नाही. ते केवळ स्थूल शरीर, मन, बुद्धीचाच विचार करतेय. विज्ञानाचे सर्व कांही अर्धवटच आहे. कारण ते चेतन तत्त्वांचा अभ्यास करू शकले नाहीत. शरीरातील कर्ता, ज्याला की आत्मा म्हंटले जाते, त्याचा जीवनाकरिता उपयोग करू शकत नाही. त्यामुळे मानव जीवनाच्या समस्या पूर्णपणे सुटू शकत नाहीत व प्रगती असून ही त्या वाढतच चालल्या आहेत. स्वास्थ्य, सुख, आनंद, शांती, परोपकार, दया, क्षमा, उदारता, करूणा या सर्व चांगल्या बाबी माणसांत कशा आणता येतील? याबद्दल आजच्या विज्ञानाला आणखी पूर्णपणे समजले नाही. म्हणूनच आज जागतिक पातळीवर मोठ्या प्रमाणात नव-नव्या अंधश्रद्धा वाढताहेत. आज

आपण विज्ञानाने कितीही विकसित होत असलो तरी आध्यात्मिकतेच्या अभावी मानवी जीवनच धोक्यात आले आहे.

एकविसाव्या शतकातील महान थोर युगपुरुष स्वामी दयानंद सरस्वती यांनी मात्र खऱ्या अर्थाने समन्वित विचार जगाला दिला. ते तत्त्वचिंतक ऋषी होते. वेद, उपनिषद, दर्शन,व्याकरण, मनुस्मृती यांचा आणि निसर्गातील नियम यांचा अभ्यास करून शाश्वत विचार जगासमोर मांडले. पाच हजारांपेक्षाही अधिक काळापासून निर्माण झालेले वेदोमंत्राच्या अनर्थांचे जाळे सत्य अर्थ प्रतिपादनाने नाहीसे केले. मानवाकरिता ज्ञान, कार्य, उपासना यांची आवश्यकता व जीवनासाठी त्यांची नितांत गरज आहे, हे स्वामीजींनी दाखवून दिले.

परमेश्वर, जीवात्मा आणि प्रकृती ही तीन तत्त्वे स्वतंत्रपणे वेगळी कशी आहेत? हे वेद व सृष्टी विज्ञानाप्रमाणे दाखवून दिले. तसेच त्यांनी मानवी जीवनाचे अंतिम लक्ष्य आत्मिक सुख, शांती, आनंद, समाधान, लौकिक सुख आणि आनंद हे सर्वांना पाहिजे. हे सर्व कसे मिळवायचे? या सर्व गोष्टी वेद, आर्ष ग्रंथ आणि सृष्टिविज्ञानाच्या आधारे दाखवून दिल्या. त्यांच्या वैदिक सिद्धांतानुसार वैश्विक स्तरावर धर्म(पंथ), जात, जीवनलक्ष्य आणि जगण्याचा मार्ग हे सर्व एकच आहेत. याकरिता सत्य ज्ञान व सन्मार्गाकडे वळण्याची गरज आहे. परमेश्वर पहिला गुरु आहे. हा प्रामाणिक गुरु जगातील मानवमात्रांना सत्यज्ञान देतो. ते ज्ञान घेण्या करिता जिज्ञासूंची पण तितकीच गरज आहे.

वेदांच्या सत्य व शाश्वत सिद्धांतांची आज जागतिक स्तरावर फारच गरज आहे. या विचारांचा सर्वत्र प्रसार व्हावा, या पवित्र उद्देशानेच स्वामीजींनी वेदभाष्य केले. आर्य समाजाची स्थापना केली. यज्ञाची उपयुक्तता सिद्ध केली. अनार्थ ग्रंथ व त्यातील अविद्या ही पूर्णपणे कशी चुकीची आहे? हे पण दाखवून दिले. विशेष म्हणजे सध्या जगात वेदांची प्रतिष्ठा वाढली ती म.दयानंदांच्या वेदभाष्यामुळेच×

मॅक्समूलर किंवा देश-विदेशातील इतर वेदाभ्यासकांनी ही दयानंदाचाच आधार घेतला आहे. सामाजिक, आध्यात्मिक आणि वैज्ञानिक विषयांना अनुसरुन जे कांही नवनवीन परिवर्तन घडत आहे, त्याचे सर्व श्रेय दयानंदांनाच जाते. ही वैदिक क्रांती जगाला खऱ्या अर्थाने सुखी करू शकते. म.दयानंद हे प्रखर सत्यवादी होते. आपल्या सत्यार्थप्रकाश व इतर ग्रंथात त्यांनी सत्याचाच आग्रह धरला. सर्व मत-संप्रदायाचे व त्याच्या ग्रंथाचे दोषदर्शन व गुणग्रहण ही केले. जे सार्वभौम, नीतिपूर्ण आणि सर्वमान्य आहे. तोच धर्म होऊ शकतो. वेद व निसर्गाच्या आधारे जे मानले तेच सत्य होऊ शकते,

असे त्यांनी स्पष्टपणे सांगितले.

आज आपल्या देशाला महाशक्ती बनविण्याची भाकीते वर्तविली जात आहेत. पण केवळ आधुनिक विज्ञानाच्या प्रगतीने अथवा वर्तमानयुगीन सांप्रदायिक विचारांनी हा देश कधीच महाशक्ती होऊ शकणार नाही. जर काय जागतिक पातळीवर भारताची महत्ता वाढवायची असेल किंवा महान शक्ती म्हणून भारताचा उदय करावयाचा असेल तर महर्षी दयानंदांनी प्रतिपादित केलेल्या विशुद्ध वैदिक सिद्धांतांच्या आधारेच मार्गक्रमण करावे लागेल. कारण स्वामीजींनी वैदिक ज्ञान व सृष्टिविज्ञानाच्या आधारे पर्यावरण, यज्ञ, संस्कृती, एक मानवजात, एक धर्म, समाजवाद, योग, राष्ट्र या गोष्टी सिद्ध केल्या आहेत. आज जगात मोठ्या प्रमाणावर कौटुंबिक, सामाजिक व वैश्विक स्तरावर ज्या कांही समस्या उद्‌भवत आहेत, त्यांचे निवारण महर्षी दयानंदांच्या वैदिक विचारांवर चालल्याशिवाय होणार नाही. कारण ह्यांचे विचार हे पूर्णत: विवेकपूर्ण आणि सृष्टि प्रक्रियेवर आधारलेले आहेत. यामुळे केवळ आपला देशच नव्हे तर सारे विश्व सुखी व समाधानी होईल हे निश्चित× ईश्वर जगातील सर्व मानव समूहास वेद मार्गाने चालण्याकरिता सामर्थ्य प्रदान करो, हीच कामना...×

स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम

-० आप भी सहाय्यक बनें ०-

कृपया गुरुकुल प्रेमी माता-बहनों व सज्जनों की सेवा में निवेदन है कि, वेद, व्याकरण, संस्कृत के अध्ययन व अध्यापन तथा आदर्श मानव निर्माण की दृष्टि से आर्य समाज परली द्वारा शहर से ३ कि.मी.दूरी पर आप सभी का प्यारा गुरुकुल **÷स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम'** इस समय प्रगतिपथ पर हैं। पर्वतीय प्राकृतिक सौंदर्य एवं रम्य वातावरण में आचार्य श्री सत्येन्द्रजी सत्योपासक के सान्निध्य में छोटे-छोटे २० ब्रह्मचारी ज्ञान ग्रहण कर सुसंस्कारों की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। दानदाता सज्जन दिल खोलकर पवित्र भाव से दान दे रहे हैं। शासन से किसी प्रकार का अनुदान न लेते हुए सारा खर्चा आर्य समाज परली के पदाधिकारी एवं अन्य सहयोगियों द्वारा गुरुकुल का संचालन हो रहा हैं। बढते खर्चे को देखते हुए गुरुकुल सेवा समिति द्वारा सभी दान-दाताओं को आर्थिक सहयोग के लिए अपील की जा रही है। बहुत सारे सज्जन एवं दानी आर्य कार्यकर्त्ता प्रतिमाह रू.१००० देने के लिए कृतसंकल्पित हो चुके हैं। कृपया आप भी अपनी पवित्र दानराशियाँ (रू.१०००, रू.५०००, रू.११०००) इस गुरुकुल के लिए निम्नलिखित बैंक खाते पर भेजकर पुण्य के भागी बनें।

खाता धारक का नाम - मंत्री, आर्य समाज परली-वैजनाथ
बैंक का नाम-भारतीय स्टेट बैंक, मोंढा मार्केट, परली-वै. जि.बीड
बैंक खाता क्र.11154152876, IFSC Code SBIN0003406

महाराष्ट्र सभा- एक प्रगतीशील आर्य संघटना

- राजेंद्र दिवे(सभामंत्री)

देशातील आघाडीचे प्रांतीय आर्य संघटन म्हणून ओळख असलेल्या महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेच्या वतीने राबविले जाणारे उपक्रम मानवकल्याणकारी आहेत, असे मत बऱ्याच विद्वानांनी खाजगी व जाहीर भाषणातून खूप वेळेस व्यक्त केले आहे. सभेच्या या प्रगतीचे व यशाचे संपूर्ण श्रेय हे सभेचे संरक्षकद्वय पू.स्वामी श्रद्धानंदजी व पू.ब्रह्ममुनिजी यांनाच जाते. मागील २० ते २५ वर्षात ब्रह्ममुनिजी यांनी जे कार्य केले, त्याला तोड नाही. त्यांच्या डोक्यात नेहमी सभेच्या कार्याची चिंता होती. सभेचे वर्षभराचे सर्व उपक्रम निर्विघ्न कसे संपन्न होतील, याची काळजी ते नेहमी करीत. सभेला आर्थिक दृष्टीने बळकटी आणण्यासाठी अथक प्रयत्न केले. बऱ्याच वेळा सदस्यांना व जवळच्या काही मंडळींना असे वाटत असे की, ब्रह्ममुनिजी हे निर्णय लादतात, हुकुमशाही पद्धतीने निर्णय घेतात. परंतु निरीक्षण केले तर असे दिसून येते की, त्या निर्णयामागे त्यांचे चिंतन दूरदृष्टीने केलेले सखोल असे आहे. त्यांनी कधीही वैयक्तिक इच्छा-आकांक्षांसाठी निर्णय घेतला नाही. फक्त आणि फक्त आर्य समाजाच्या कार्याची चिंता नेहमी केलेली आहे. प्रसंगी त्यांनी अपमानही सहन केला व आर्थिक झळही सोसली आहे.

सभेच्या कामासाठी फिरत असतांना त्यांनी कधीही सभेकडून खर्च घेतला नाही. आपल्या स्वत:च्या खिशातून त्यांनी खर्च केला आहे. प्रसंगी बस किंवा रेल्वे चुकली तर स्टँडवर, स्टेशनवर रात्र काढली. परंतु कोणाला विनाकारण त्रास देवू नये, असे वाटल्याने त्यांनी स्थानिक कार्यकर्त्यांच्या घरीही मुक्काम करण्याचे टाळले आहे. अर्थशुचितेवर त्यांचा कटाक्ष असायचा.

सभेमध्ये बऱ्याच विद्वान कार्यकर्ते यांच्या नावे ठेवी जमा करून सभेला आर्थिक दृष्टीने सक्षम बनवले आहे. यासाठीही ते नेहमी प्रवास करत असत. याकरिता बरेच दानी महानुभाव नंतर रक्कम देतो, म्हणून दान पावती घेत असत. मग नंतर ते त्यांना त्यांच्या वैयक्तिक अडचणीमुळे देणे होत नसे, अशा वेळी सदरच्या न वसूल झालेल्या बऱ्याच रक्कमा स्वत: मुनिजींनी भरणा केल्या आणि त्या स्थिरनिधी पूर्ण केल्या. कारण एकदा पावती दिली म्हणजे रक्कम मिळालीच असा अर्थ होतो व ती रक्कम जमा करण्याची जबाबदारी पावती दिलेल्या व्यक्तीवर असते, असे ते म्हणत. परिणामी हजारोंचे आर्थिक नुकसान त्यांना सोसावे लागले

आहे. ज्याचा उल्लेख कधीही त्यांनी इतरांपुढे केला नाही. रात्रंदिवस विचार करून एखादी योजना तयार करत असत. ती योजना व ते कार्य तडीस नेण्यासाठी, संपन्न करण्यासाठी मनुष्यबळाची आवश्यकता असे. अशा वेळी **÷ज्या ठिकाणी कमी, त्या ठिकाणी मुनी'** असा नियमच बनून गेला होता. विचारांच्या दडपणामुळे व कामाच्या ताणामुळे त्यांच्या प्रकृतीवर प्रतिकूल परिणाम होत गेला. दडपण वाढत गेल्याने प्रकृती ढासाळतच गेली. परिणामी डॉक्टरांनी त्यांना सक्तीच्या शारीरिक व मानसिक विश्रांतीचा सल्ला दिला. तब्येतीमध्ये सुधारणा झाली असली तरीही ती आणखी चांगली होणे आवश्यक आहे. त्यांचे मार्गदर्शन आपणांस व सभेच्या कार्यास लाखमोलाचे आहे. हे आपण सर्वांनी विसरता कामा नये.

पू.मुनिजींच्या पदचिन्हांवर चालत असतांना सभेने नवनवीन उपक्रम हाती घेण्याचे ठरवले आहे. त्यासाठी आपणा सर्वांची साथ आवश्यक आहे. गुरुकुलासाठी योग्य आचार्य लाभल्याने ते ही काम मार्गी लागले आहे. परंतु त्यासाठी लागणारे धन आपणां सर्वांच्याकडून अपेक्षित आहे. पुढील वर्षी विद्यार्थी संख्या निश्चितच ५०च्या वर जाईल, त्यावेळी वाढीव आर्थिक भार पेलण्यासाठी आपणां सर्वांकडूनच मदतीची अपेक्षा आहे. सध्या आपण विद्यार्थ्यांना कसल्याही प्रकारच्या शुल्काची आकारणी करत नाही. गुरुकुल चालवावे की न चालवावे व कसे चालवावे? याबाबत अनेक मतप्रवाह आहेत. परंतु मतप्रवाह कितीही असले तरी आर्षप्रणालीची शिक्षा पद्धती बुडाली नाही पाहिजे, यावर सर्वांचे एकमत आहे, त्यात दुमत नाही. गुरुकुल चालविणे हे एक परमेश्वरीय कार्य आहे, असे समजून अत्यंत श्रद्धेने आपली आहुती द्यावी. ज्यामुळे आचार्यजी मुलांना घडविण्याचे कार्य निश्चितपणे करू शकतील.

वैदिक गर्जना सभा चालवते. सभेचे उपक्रम व वैचारिक लेख आपल्यापर्यंत पोहचणे आवश्यक आहे. तसेच हे एक प्रभावी प्रचाराचे माध्यम असल्याने त्यांचे आजीवन सभासद बनविणे आवश्यक आहे. जितके सभासद बनविले जातील किंवा मोठी मदत करतील, तर या पत्रिकेचा स्तर आपण उंचावू शकतो. त्यामुळे हे एक आपलेच कार्य समजून आजीवन सदस्य संख्या वाढवावी. अशा ह्या प्रगतीपथावर असलेल्या सभेच्या कार्याला आपले सर्वतोपरी आशीर्वाद असल्यावर कार्य आणखी वाढेल हे नक्की× ह्यासाठीच हा प्रयत्न. परमेश्वर सर्वांना बळ देवो व हे कार्य उत्तरोत्तर वाढो, हीच कामना..×

– ÷घरकुल',नारायणनगर, लातूर

मो.९८२२३६५२७२

जाधव यांना आर्य समाज विषयावर पीएच्.डी.

उमरगा (जि.उस्मानाबाद) येथील दिशा अॅकॅडमीचे संचालक व युवा आर्य कार्यकर्ते प्रा.श्री राम जाधव यांना सोलापुर विद्यापीठाने नुकतीच पीएच.डी. पदवी प्रदान केली. त्यांनी ÷**आर्य समाज को हिन्दी भाषा की देन** (मराठवाडा के सन्दर्भ में)' या विषयावर ३६० पृष्ठांचा अभ्यासपूर्ण प्रबंध विद्यापीठास सादर केला होता. हिंदी विषयाच्या तज्ज्ञ अभ्यासिका प्रा.डॉ.सुरैया शेख (सोलापुर) यांच्या मार्गदर्शनाखाली प्रा.श्री जाधव यांनी वरील विषयावर जवळपास ५ वर्षे संशोधन केले. ठिकठिकाणचे आर्य समाज व विद्वानांच्या भेटी घेऊन मराठवाड्यातील आर्य समाजाने हिंदी भाषेच्या प्रसार व संवर्धनासंदर्भात दिलेल्या योगदानाचा अभ्यास केला. विविध ग्रंथ व पत्र-पत्रिकांमधून माहिती संकलित करून त्यांनी राष्ट्रभाषेविषयी आर्य समाजाचे मौलिक कार्य प्रकाशात आणले आहे. याकरिता हिन्दी विषयाचे गाढे अभ्यासक प्रा.ओमप्रकाश होळीकर व साहित्यिक प्राचार्य वेदमुनिजी वेदालंकार यांचे श्री जाधव यांना मोलाचे सहकार्य लाभले.

श्री जाधव हे उत्साही आर्य युवक असून उमरगा आर्य समाजाशी संलग्न आहेत. यापूर्वी त्यांनी ५ वर्षापर्यंत उस्मानाबादच्या तेरणा महाविद्यालयात हिन्दीचे प्राध्यापक म्हणून कार्य केले आहे. पीएच.डी. प्राप्त केल्याबद्दल हैद्राबाद मुक्ती संग्रामदिनी डॉ.श्री राम जाधव यांचा आर्य समाज, रामनगर(लातूर) च्या वतीने सत्कार करण्यात आला. या मौलिक संशोधन कार्याबद्दल आर्यजनांतर्फे त्यांचे हार्दिक अभिनंदन व शुभेच्छा×

परळीच्या वेदप्रचार उत्सवाची यशस्वी सांगता

काळाच्या ओघात माणसाची प्रवृत्ती बदलत चालली आहे. जगण्याची शैली देखील मोठ्या प्रमाणात परिवर्तीत होत असतांना वेगवेगळ्या प्रश्नांमुळे माणसाला जगणे असह्य झाले आहे. अशा परिस्थितीत वेदांचे मूल्याधिष्ठित विचार सदैव प्रासंगिक राहतील. वेदविचारांमुळे सर्व समस्यांचे निराकरण शक्य आहे, असे विचार वैदिक विद्वान पं.चंद्रपालजी शास्त्री यांनी मांडले.

परळी येथील आर्य समाज श्रावणी उत्सव १९ ते २६ ऑगस्ट दरम्यान उत्साहात साजरा झाला. समारोपदिनी

÷वेदांची प्रासंगिकता' या विषयावर श्री शास्त्रीजी बोलत होते. संस्थेचे अध्यक्ष श्री जुगलकिशोर लोहिया यावेळी अध्यक्षस्थानी होते. श्री पं.शास्त्रीजींची दररोज सकाळी व रात्री विविध विषयांवर प्रवचने पार पडली. आर्य भजनोपदेशक पं.रामकुमार यांनी भजने सादर केली. अ ा य ै समाजाच्या कार्यक्रमासोबतच शहरातील वैद्यनाथ महाविद्यालय, सरस्वती विद्यालय, ल.दे.महिला महाविद्यालय व इतर ठिकाणीही शास्त्रीजींची व्याख्याने पार पडली.

चिल्ले वक्तृत्त्व स्पर्धेत परळीची कु.मंजुश्री प्रथम

नळेगावची कु.उषा द्वितीय तर औरादची कु.रजनी तृतीय

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेतर्फे स्वा.सै.श्री मन्मथअप्पा (आनंदमुनिजी) व सौ.कलावतीबाई चिल्ले यांच्या गौरवार्थ घेण्यात येणारी राज्यस्तरीय आंतर महाविद्यालयीन वक्तृत्त्व स्पर्धा यंदा दि.२२ डिसेंबर २०१८ रोजी औराद(शहा.) ता.निलंगा येथील आर्य समाजाच्या वतीने मा.दीनानाथ मंगेशकर महाविद्यालयातपार पडली. यात १५ स्पर्धक सहभागी झाले.

या स्पर्धेत परळीच्या वैद्यनाथ महाविद्यालयाची विद्यार्थिनी कु.मंजुश्री सूर्यकांत घोणे हिने प्रथम तर नळेगावच्या शिवजागृती महाविद्यालयाची विद्यार्थिनी कु.उषा तुकाराम गोणशेट्टे हिने द्वितीय क्रमांक पटकावला. तृतीय क्रमांक औराद (शहा.)च्या कु.रजनी रमेश मोरे हिने मिळविले. उत्तेजनार्थ पुरस्कारासाठी चि.अभिषेक व्यंकट मोरे, चि.अनिकेत मधुकर मडोळे(दोन्ही शाहु महाविद्यालय, लातूर) व कु.शरयू संदीपान गिराम(वैद्यनाथ महाविद्या., परळी) यांची निवड झाली.

वरील सर्व विजेत्यांना सभेतर्फे अनुक्रमे रू.२०००/-(प्रथम), रू.१५००/-(द्वितीय), रू.१०००/-(तृतीय) अशी पारितोषिके प्रान करण्यात आली तर प्रत्येकास रू.५००/- ची उत्तेजनार्थ तीन पारितोषिके सभामंत्री श्री राजेन्द्र दिवे, डॉ.नयनकुमार आचार्य व डॉ.प्रकाश कच्छवा यांनी आपल्या वतीने दिली. तसेच सर्व स्पर्धकांना प्रमाणपत्रे व वैदिक साहित्याचे वितरण करण्यात आले.

महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ.गहरेवार यांच्या अध्यक्षतेखाली व प्रा.पाटील, सभेचे मंत्री राजेंद्र दिवे, डॉ.नयनकुमार आचार्य व परीक्षक सर्वश्री प्रा.सतीश हानेगावे(कवी), प्रा.डॉ.अशोक नारनवरे(साहित्यिक), प्रा.युवराज ढविले(समीक्षक) व डॉ.प्रकाश कच्छवा(वेदाभ्यासक) यांच्या उपस्थिततीत हा कार्यक्रम पार पडला. सूत्रसंचलन प्रा.सुरेंद्र पाटील यांनी केले.

स्व.बिराजदार स्मृती वक्तृत्त्व स्पर्धेत कु.श्रद्धा वसू प्रथम

कु.ऋतुजा बाबळे द्वितीय, तर कु.अंजली यादव तृतीय

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेतर्फे हिंगोली येथील आर्य समाजात ९ डिसेंबर २०१८ रोजी घेण्यात आलेल्या स्व.विठ्ठलराव बिराजदार स्मृती राज्यस्तरीय विद्यालयीन वक्तृत्त्व स्पर्धेला चांगलाच प्रतिसाद मिळाला. यात जवळपास १३ विद्यार्थ्यांनी सहभाग घेतला. या स्पर्धेत हिंगोलीच्या सरजुदेवी भिखुलाल भारुका आर्य कन्या विद्यालयाची विद्यार्थीनी कु.श्रद्धा यशवंतराव वसु हिने प्रथम क्रमांक मिळविला, तर द्वितीय क्रमांक हिंगोलीच्याच शांताबाई मुंजाजी दराडे माध्यमिक विद्यालयाची कु.ऋतुजा शिवशंकर वाबळे व तृतीय क्रमांक परळीच्या न्यू हायस्कुल विद्यालयाची विद्यार्थीनी कु.अंजली राजकुमार यादव यांनी मिळविला.या तिन्ही विजेत्या विद्यार्थीनींना अनुक्रमे रू.१५००(प्रथम), रू.११००(द्वितीय) व रु.७५०(तृतीय), वैदिक साहित्य व प्रमाणपत्रांचे वितरण मान्यवरांच्या हस्ते करण्यात आले. या स्पर्धेकरिता ÷म.दयानंदांचे ईश्वरविषयक विचार' हा विषय ठेवण्यात आला होता. स्पर्धेला परीक्षक म्हणून श्री लक्ष्मणराव आर्य गुरुजी-परळी व श्रीमती ए.व्ही. बोराडे हे उपसिथत होते. ही स्पर्धा हिंगोली शहरातील गाडीपुरा आर्य समाजात पार पडली. प्रारंभी यज्ञ व भजन कार्यक्रम संपन्न झाले. आर्य समाजाचे पदाधिकारी सर्वश्री ओमप्रकाशजी भारुका, संतोषकुमार लदनिया, सुरेशजी गव्हाणकर, अनिलकुमार भारुका, गजानन ठाकूर, राजेश अग्रवाल, मु.अ.गायकवाड बाई यांच्या शुभहस्ते पारितोषिकांचे वितरण करण्यात आले.

मराठी साहित्य संमेलनात ÷वैदिक साहित्य' स्टॉल

नुकत्याच दि.११, १२ व १३ जानेवारी २०१९ रोजी यवतमाळ येथे पार पडलेल्या अ.भा.मराठी साहित्य संमेलनात सभेच्या व आर्यसमाजाच्या वतीने वैदिक साहित्याचे स्टॉल लावण्यात आले होते. याकरिता अमेरिकेतील वैदिक धर्मी व समाजमाध्यम समुहावरील आर्य प्रचारक श्री रणजितजी चांदवले यांनी व त्यांच्या सहकार्यांनी बहुमोल प्रयत्न केले. यात मराठी सत्यार्थ प्रकाश, धर्म आणि विज्ञान यांसह इतर वैदिक साहित्य ठेवण्यात आले होते. यासाठी नांदेडचे आर्य कार्यकर्ता श्री नारायणराव कुलकर्णी व श्री ओमकुमार कुरुडे यांनी तीन दिवस संमेलनस्थळी उपस्थित राहून पूर्ण सहकार्य केले. यावेळी मराठीतून आर्य समाज परिचय व वैदिक ज्ञान पत्रकांचेही वितरण करण्यात आली.

दोन स्नातकांना ÷आदर्श शिक्षक' पुरस्कार

गुरुकुलांचे दोन स्नातक शिक्षक श्री उद्धव शास्त्री (बीड) व श्री तानाजी शास्त्री(परळी) यांना ÷आदर्श शिक्षक' पुरस्काराने नुकतेच सन्मानित करण्यात आले आहे. बीडच्या चंपावती विद्यालयाचे संस्कृत शिक्षक श्री उद्धव शास्त्री यांना शक्ती प्रतिष्ठाण बीड या सामाजिक संस्थेने तर परळीतील न्यू हायस्कूलचे संस्कृत शिक्षक श्री तानाजी शास्त्री यांना मल्हार प्रतिष्ठाण तर्फे ÷यशवंत रत्न' हा आदर्श शिक्षक पुरस्कार देण्यात आला आहे. या दोन्हीं स्नातक शिक्षकांचे हार्दिक अभिनंदन...×

शोक वार्ता

चंद्रकांत धर्मशेट्टी यांचे निधन

निलंगा येथील आर्य समाजाचे कोषाध्यक्ष श्री चंद्रकांत शंकराप्पा धर्मशेट्टी यांचे दि.१३ नोव्हेंबर रोजी मध्यरात्री २ वा. सुमारास हृदयविकाराने दु:खद निधन झाले. मृत्युसमयी ते ८० वर्षे वयाचे होते.

त्यांच्या पश्चात् पत्नी, २ मुले, सुना, नातवंडे असा परिवार आहे.

आर्य समाज निलंगाच्या विविध उपक्रमांना वाढविण्याकरिता श्री धर्मशेट्टी यांनी मोलाचे योगदान दिले. सामाजिक कार्यात सहभागी होणारे ते एक प्रतिष्ठित व्यापारी व प्रगतिशील शेतकरी होते. २० वर्षे तालुका खरेदी विक्री संघाचे मॅनेजर म्हणूनही त्यांनी कार्य केले. तर कांही वर्षे आर्य समाजाचे मंत्री म्हणूनही काम पाहिले. शांत, मनमिळावू व सुस्वभावी आर्य कार्यकर्त्याच्या आकस्मिक निधनाने कुटुंब व आर्य समाजाचे हानी झाली आहे.

श्रीमती मनोरमा बाजपेयी यांचे देहावसान

लातूर येथील गांधी चौक आर्य समाजाचे माजी मन्त्री व सदस्य आणि पहिले नगराध्यक्ष स्वा.सै.दिवंगत चंद्रशेखरदादा बाजपेयी यांच्या धर्मपत्नी श्रीमती मनोरमादेवी बाजपेयी यांचे दि.२८ नोव्हेंबर रोजी वृद्धापकाळाने दु:खद निधन झाले. मृत्युसमयी त्या ९२ वर्षे वयांच्या होत्या. त्यांच्या मागे एक मुलगा, तीन मुली, सून व नातवंडे असा परिवार आहे.

मनोरमा देवी यांनी पतींच्या शैक्षणिक, सामाजिक, आर्य सामाजिक, कार्यात मोलाची भूमिका बजावली.त्यांच्या पार्थिवावर प्रा.चंद्रशेखरजी शास्त्री यांच्या पौराहित्याखाली अंतिम संस्कार करण्यात आले. यावेळी प्रतिष्ठित मान्यवर व आर्य कार्यकर्ते उपस्थित होते. गांधी चौक, आर्य समाजातर्फे दिवंगत आत्म्यास श्रद्धांजली वाहण्यात आली.

सदाशिवराव कटके यांचे देहावसान

उमरगा जि.उस्मानाबाद येथील आर्य समाजाचे माजी प्रधान व सामाजिक कार्यकर्ते श्री सदाशिवराव गिरजाप्पा कटके यांचे १ जानेवारी २०१९ रोजी वृद्धापकाळाने दुःखद निधन झाले. त्यांच्या मागे पत्नी, दोन मुले, दोन मुली, जावाई, सुना, भाऊ व नातवंडे असा परिवार आहे.

स्व.कटके यांनी स्थानिक आर्य समाजाचे १० वर्षे मंत्री म्हणून कार्य केले. तसेच ते स्वामी विवेकानंद व बसवेश्वर शिक्षण संस्थेचे सचिव देखील होते. शाळेचे केंद्रप्रमुख, रा.स्व.संघाचे तालुका संघचालक, भाजपाचे कार्यकर्ते म्हणूनही कार्य केले आहे. एक प्रतिष्ठित सामाजिक कार्यकर्ता म्हणून त्यांची उमरगा शहर व परिसरात ओळख होती. विद्यमान आमदार श्री ज्ञानराज चौगुले यांचे ते मामा होते. विद्यार्थी जीवनात श्री कटके समाजसेवक पू.हरिश्चंद्र गुरुजी यांच्या संपर्कात आले व आर्यसमाजाकडे वळले. श्री विज्ञानमुनीजी यांच्याशी त्यांची घनिष्ट मैत्री होती.

दिवंगत कटके यांच्या पार्थिवावर पं.दिनकरराव देशपांडे यांच्या प्रमुख पौराहित्याखाली वैदिक पद्धतीने अंत्य संस्कार करण्यात आले. यावेळी डॉ.महाजन, अनिल धारुरकर यांच्यासह शहरातील सर्व स्तरातील मान्यवर मंडळी, शिक्षक व सामाजिक कार्यकर्ते मोठ्या प्रमाणात उपस्थित होते.

ज्ञानेश्वर मोहिते यांचे निधन

महाराष्ट्र सभेचे लिपीक ब्र.अविनाश मोहिते यांचे वडील श्री ज्ञानेश्वर कान्होजी मोहिते (वय ५५ वर्षे) यांचे दि.२८ नोव्हेंबर २०१८ रोजी संध्याकाळी ह्रदयविकाराने आकस्मिक निधन त्यांच्या मागे पत्नी सौ.कुंदा, पुत्र, दोन विवाहित कन्या, जावई व नातवंडे असा परिवार आहे.त्यांच्या पार्थिवावर भोर (जि.पुणे) या गांवी वैदिक पद्धतीने अंतिम संस्कार करण्यात आले. श्रद्धानंद गुरुकुल आश्रमाचे आचार्य श्री सत्येन्द्रजी विद्योपासक व श्री प्रवीण शास्त्री यांनी हा अंत्यविधी संपन्न केला.

सर्व दिवंगतांना महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा व आर्य समाजांच्या वतीने भावपूर्ण श्रद्धांजली× शोकाकुल कुटुंबियांच्या दुःखात आर्यजन सहभागी आहेत.

|| कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ||

श्रेष्ठ मानव बनों × **वेदों की ओर लौटो !**

वेद प्रतिपादित मानवीय
जीवन मूल्यों को
जन-जन तक पहुंचाने हेतु
कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन-पुष. ३३३/र.नं.६/टी.इ. (७)१६७/१०४९,
स्थापना ५ मार्च १९७७)

मानव कल्याणकारी उपक्रम

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव-'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मल्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.व.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान - विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ-जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ-कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

हिंगोली– विद्यालयीन वक्तृत्त्व स्पर्धा–विजेता छात्रों के साथ आर्य समाज पदाधिकारी एवं अध्यापक

औराद शहा.– महाविद्या. वक्तृत्त्व स्पर्धा–विजेता छात्रों के साथ आर्य समाज पदाधिकारी एवं परीक्षक

मानव निर्माण अभियान में विद्यालय को सत्यार्थ प्रकाश भेट करते हुए वैदिक विद्वान।

Reg.No.MAHBIL/2007/7493*Postal No.L/Beed/24/2018-2020

सेवा में,
श्री. ______________________

____

____

____

प्रेषक -
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली-वैजनाथ,
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के संपर्क कार्यालय-आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१५१५ (महाराष्ट्र) इस स्थान से प्रकाशित किया।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

।। ओ३म् ।।

हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम के स्वाधीनता सैनिक,
हिन्दी रक्षा आन्दोलन के सत्याग्रही,
लोकमान्य शिक्षण संस्था, पानचिंचोली
(ता.निलंगा जि.लातुर) के संस्थापक, समाजसेवी व्यक्तित्व
स्व.श्री.वासुदेवराव हनुमंतराव होलीकर
की पावन स्मृतिमें उनकी सहधर्मचारिणी
श्रीमती रुक्मिणीदेवी वासुदेवराव होलीकर
की ओर से वैदिक गर्जना मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ भेंट

जीवेत् शरदः शतम् !